अध्याय 10: नौबतखाने में इबादत

विषय-सूची

3 प्रश्नावली · 12 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1	प्रश्न-अभ्यास	7 प्रश्न
प्रश्नावली 10.2	रचना और अभिव्यक्ति	3 प्रश्न
प्रश्नावली 10.3	भाषा-अध्ययन	2 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

हल

शहनाई की दुनिया में डुमराँव को दो कारणों से याद किया जाता है—

1. शहनाई बजाने के लिए रीड (नरकट) का प्रयोग होता है। रीड एक प्रकार की घास है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। बिना रीड के शहनाई नहीं बजाई जा सकती, इसलिए शहनाई का डुमराँव से गहरा संबंध है।

2. विश्व-प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म डुमराँव, बिहार में हुआ था। उनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ भी डुमराँव निवासी थे।

इस प्रकार डुमराँव शहनाई वाद्य की रीड का स्रोत भी है और शहनाई के महानतम वादक की जन्मभूमि भी।

उत्तर: डुमराँव में शहनाई की रीड (नरकट) मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है और यह उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की जन्मभूमि भी है — इन दोनों कारणों से शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किया जाता है।

प्रश्न 2

बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

हल

बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि—

1. शहनाई एक मांगलिक वाद्य है जिसे मंगल अवसरों पर बजाया जाता है। दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम्' की तरह शहनाई प्रभाती की मंगलध्वनि का संपूरक है।

2. बिस्मिल्ला खाँ अस्सी वर्षों से सच्चे सुर की साधना करते रहे। उनकी पाँचों वक्त की नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च होती थी।

3. वे बालाजी मंदिर की ड्योढ़ी पर रोज़ शहनाई बजाकर मंगलध्वनि का प्रसार करते थे। उनके खानदान की परंपरा थी कि वे मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाएँ।

4. शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है और बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी साधना से इस वाद्य को देश-विदेश में प्रतिष्ठित किया।

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि वे अस्सी वर्षों तक नित्य मंगलध्वनि बजाते रहे, उनकी पाँचों वक्त की नमाज सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च होती थी, और उन्होंने शहनाई को सुषिर वाद्यों का सरताज बना दिया।

प्रश्न 3

सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

हल

सुषिर-वाद्यों से अभिप्राय: संगीत शास्त्र में वाद्य यंत्रों की चार श्रेणियाँ मानी जाती हैं — तत-वितत (तार वाले), सुषिर (फूँक कर बजाए जाने वाले), घनवाद्य (आघात से बजाए जाने वाले धातु वाद्य), और अवनद्ध (चमड़े से मढ़े वाद्य)। सुषिर वाद्य वे हैं जिन्हें फूँककर बजाया जाता है, जैसे— बाँसुरी, शहनाई, नागस्वरम्, बीन।
शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों मिली होगी:
1. अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य को 'नय' कहते हैं और शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'नयों में शाह' (सर्वश्रेष्ठ) कहा गया।
2. शहनाई अपनी विशिष्ट मधुरता, गहराई और सप्तकीय विस्तार के कारण अन्य सुषिर वाद्यों से श्रेष्ठ मानी जाती है।
3. यह वाद्य मांगलिक अवसरों, मंदिरों, और दरबारों में बजाया जाता था, अतः इसे सम्मान की उपाधि दी गई।
4. बिस्मिल्ला खाँ की साधना से यह वाद्य डेढ़ सप्तक से दो सप्तक का साज बना और साजों की कतार में सरताज हो गया।

उत्तर: सुषिर वाद्य वे हैं जिन्हें फूँककर बजाया जाता है (जैसे बाँसुरी, शहनाई, बीन)। शहनाई को उसकी अपूर्व मधुरता, मांगलिक महत्त्व और सप्तकीय विस्तार के कारण 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई — यही कारण है कि अरबी में इसे 'शाहेनय' कहते हैं।

प्रश्न 4

आशय स्पष्ट कीजिए— (क) 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।' (ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

हल

(क) आशय: यह कथन बिस्मिल्ला खाँ का है जो उन्होंने अपनी शिष्या को उत्तर में कहा जब उसने उन्हें फटी लुंगी न पहनने की सलाह दी।
खाँ साहब का कहना है कि कपड़ों की कोई परवाह नहीं — लुंगी फटी है तो कल सी जाएगी, क्योंकि वह केवल कपड़ा है। लेकिन यदि सुर (संगीत) 'फटा' अर्थात् बेसुरा हो जाए तो उसकी भरपाई नहीं हो सकती।
इस कथन से स्पष्ट होता है कि बिस्मिल्ला खाँ के लिए संगीत की साधना और सच्चा सुर ही जीवन का सर्वोच्च मूल्य था। भौतिक वस्तुएँ गौण थीं, संगीत सर्वोपरि था। यह उनकी सरलता और संगीत के प्रति अनन्य समर्पण को दर्शाता है।

(ख) आशय: यह बिस्मिल्ला खाँ की ईश्वर से प्रार्थना है जो वे नमाज के बाद सजदे में करते हैं।
वे अपने 'मालिक' (ईश्वर) से केवल एक वरदान माँगते हैं — एक सच्चा सुर। और वह सुर भी ऐसा जिसकी

'तासीर' (प्रभाव/असर) इतनी गहरी हो कि सुनने वालों की आँखों से अपने आप आँसू बह निकलें — जैसे सच्चे मोती अनगढ़ होते हैं, वैसे ही वे आँसू सहज और वास्तविक हों।

यह कथन संगीत के प्रति उनकी असीम आस्था, ईश्वर-भक्ति और संगीत को ईबादत मानने की भावना को प्रकट करता है। उनके लिए सच्चा संगीत ईश्वर की कृपा है, मनुष्य का कौशल मात्र नहीं।

उत्तर: (क) बिस्मिल्ला खाँ के लिए संगीत का सुर जीवन में सर्वोपरि था; कपड़े जैसी भौतिक वस्तुएँ तुच्छ थीं — लुंगी सी जाएगी पर फटा सुर नहीं ठीक होगा। (ख) वे ईश्वर से सच्चा और असरदार सुर माँगते हैं जो सुनने वालों को भावविभोर कर दे — यह संगीत को इबादत मानने की उनकी आस्था को व्यक्त करता है।

प्रश्न 5

काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

हल

काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे—

1. संगीत परंपरा का ह्रास: पक्का महाल (काशी विश्वनाथ से लगा हुआ इलाका) से संगीत, साहित्य और अदब की बहुत-सी परंपराएँ लुप्त हो गई थीं। कजली, चैती और अदब का वह जमाना जाता रहा।
2. रियाज का अभाव: अब घंटों रियाज को कोई नहीं पूछता था। संगतियों के लिए गायकों के मन में आदर नहीं रहा — यह बात खाँ साहब को बहुत दुखी करती थी।
3. खान-पान की परंपरा का अंत: पक्का महाल से मलाई बर्फ़ बेचने वाले जा चुके थे। देशी घी में वैसी कचौड़ी-जलेबी भी नहीं रही। खाँ साहब को इसकी बड़ी कमी खलती थी।
4. गंगा-जमुनी संस्कृति का क्षरण: मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति एक-दूसरे की पूरक थी, वह भी इतिहास बनती जा रही थी।

बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक व्यक्ति की भाँति इन सब परिवर्तनों से व्यथित थे।

उत्तर: काशी से संगीत की प्राचीन परंपराएँ (कजली, चैती, अदब) लुप्त होना, रियाज और गायकों के प्रति आदर का अभाव, मलाई बर्फ़ और देशी घी की कचौड़ी जैसी परंपराओं का खत्म होना, तथा गंगा-जमुनी संस्कृति का क्षरण — ये सब परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे।

प्रश्न 6

पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि— (क) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे। (ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे।

हल

(क) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे — इसके प्रमाण:

• वे मुसलमान थे फिर भी काशी के बालाजी मंदिर की ड्योढ़ी पर रोज शहनाई बजाते थे और काशी विश्वनाथ के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी।

• संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती पर होने वाले पाँच दिवसीय शास्त्रीय-उपशास्त्रीय संगीत के आयोजन में वे हमेशा शामिल रहते थे।

• जब वे काशी से बाहर होते थे तो विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा में मुँह करके बैठते और शहनाई का

प्याला उसी ओर घुमा देते थे।
• मुहर्रम के अवसर पर वे शोक में शहनाई बजाते हुए दालमंडी तक पैदल जाते थे।
• काशी को वे अपनी जन्नत मानते थे और कहते थे — 'शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं।'
• वे हमेशा दो कौमों को एक होने और आपस में भाईचारे से रहने की प्रेरणा देते रहे।

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे — इसके प्रमाण:
• भारतरत्न मिलने के बावजूद वे सादगी से रहते थे। फटी तहमद पहनते थे और शिष्या के टोकने पर हँसकर कहा — 'भारतरत्न शहनई पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं।'
• वे बचपन में फिल्में देखने के लिए मामू, मौसी और नानी से दो-दो पैसे माँगते थे — बिल्कुल साधारण बच्चे की तरह।
• मुहर्रम में इमाम हुसैन और उनके परिवार की शहादत में उनकी आँखें नम रहती थीं — एक बड़े कलाकार का सहज मानवीय रूप।
• काशी में पुरानी परंपराओं के नष्ट होने पर वे सच्चे दिल से अफसोस जताते थे।

उत्तर: (क) बालाजी मंदिर पर शहनाई वादन, संकटमोचन महोत्सव में भागीदारी और दो कौमों को जोड़ने की प्रेरणा — ये प्रसंग उन्हें मिली-जुली संस्कृति का प्रतीक सिद्ध करते हैं। (ख) सादगी से जीना, फटी तहमद में मिलना, बचपन में मामू से पैसे माँगना और मुहर्रम में भाव-विह्वल होना — ये प्रसंग उन्हें एक सच्चा इनसान सिद्ध करते हैं।

प्रश्न 7

बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया।

हल

बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना को समृद्ध करने वाली घटनाएँ और व्यक्ति:

व्यक्ति:

1. नाना: बिस्मिल्ला खाँ के नाना काशी के बालाजी मंदिर में प्रतिष्ठित शहनाईवाज थे। बचपन में वे छुपकर नाना को शहनाई बजाते सुनते थे। सम पर आने की तमीज उन्हें बचपन में ही आ गई।
2. मामू सादिक हुसैन और अलीबख्श: ये उनके मामाद्वय देश के जाने-माने शहनाई वादक थे जो विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने जाते थे। इनसे बचपन में संगीत की प्रेरणा मिली।
3. रसूलनबाई और बतूलनबाई: ये दोनों गायिका बहनें थीं। अमीरुद्दीन (बिस्मिल्ला खाँ) बालाजी मंदिर जाने के रास्ते में इनका गाना सुनता था। उनके ठुमरी, टप्पे और दादरा ने संगीत के प्रति उनकी आसक्ति जगाई। खाँ साहब ने स्वयं स्वीकार किया कि अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला इन्हीं गायिका बहिनों ने उकेरी।
4. एक फकीर: किसी फकीर ने छोटे अमीरुद्दीन को 'बजा, बजा' कहा था — वह दुआ उन पर लगी।

घटनाएँ:

1. बालाजी मंदिर की ड्योढ़ी पर नित्य रियाज: 14 वर्ष की उम्र से वे नौबतखाने में रियाज के लिए जाते थे।
2. कुलसुम हलवाइन की दुकान: जब वे कचौड़ी की कलकलाती आवाज में आरोह-अवरोह देखते थे — संगीत की समझ हर चीज़ से जुड़ी थी।

3. सम पर पत्थर मारना: बचपन में जब मामू सम पर आते थे, तब वे पत्थर मारकर दाद देते थे — ताल और सम की समझ बचपन से ही थी।

उत्तर: नाना (बालाजी मंदिर के शहनाईवाज), मामाद्वय सादिक हुसैन व अलीबख्श, गायिका बहनें रसूलनबाई-बतूलनबाई, एक फकीर की दुआ और बालाजी मंदिर में नित्य रियाज की परंपरा — इन सबने बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना को समृद्ध किया।

प्रश्नावली 10.2 — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8

बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

हल

बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रभावित करती हैं—

1. अदम्य संगीत-साधना: अस्सी वर्षों से अधिक समय तक उन्होंने शहनाई की साधना जारी रखी। 80 वर्ष की उम्र में भी उनकी साधना रुकी नहीं — यह अविराम लगन और धैर्य असाधारण है।
2. सादगी और विनम्रता: भारतरत्न, पद्मविभूषण और अनेक विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियाँ पाने के बाद भी वे सादे जीवन जीते थे, फटी तहमद पहनते थे और यश का अहंकार उनके पास नहीं था।
3. आध्यात्मिक दृष्टि: वे संगीत को इबादत मानते थे। हर नमाज में खुदा से सच्चे सुर की दुआ माँगते थे। उनके लिए सुर ईश्वर की कृपा थी।
4. धर्मनिरपेक्षता और गंगा-जमुनी संस्कृति: मुस्लिम होते हुए भी वे काशी विश्वनाथ और बालाजी के भक्त थे, हिंदू मंदिरों में शहनाई बजाते थे और दोनों कौमों को जोड़ते थे।
5. बालसुलभ स्वभाव: वे हँसमुख, बालसुलभ और बचपन की यादों में खोने वाले इनसान थे। सुलोचना को याद करते हुए उनके गालों पर चमक आ जाती थी।
6. परंपरा के प्रति निष्ठा: 'मरते दम तक न यह शहनाई छूटेगी न काशी' — यह वफादारी और जड़ों से जुड़ाव प्रेरणादायक है।

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ की अदम्य संगीत-साधना, असाधारण सादगी, संगीत को इबादत मानने की आस्था, गंगा-जमुनी धर्मनिरपेक्षता, बालसुलभ हँसी और काशी के प्रति अटूट प्रेम — ये विशेषताएँ उन्हें एक महान कलाकार के साथ-साथ एक महान इनसान भी बनाती हैं।

प्रश्न 9

मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।

हल

मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का बड़ा गहरा और भावनात्मक जुड़ाव था।

मुहर्रम का महीना वह होता है जिसमें शिया मुसलमान हजरत इमाम हुसैन और उनके वंशजों की शहादत पर अजादारी (शोक मनाना) करते हैं। यह पूरे दस दिनों का शोक होता है।

बिस्मिल्ला खाँ के खानदान का कोई भी व्यक्ति मुहर्रम के दिनों में न शहनाई बजाता था, न किसी संगीत कार्यक्रम में शामिल होता था।

आठवीं तारीख उनके लिए विशेष महत्त्व की थी। इस दिन वे खड़े होकर शहनाई बजाते थे और दालमंडी में फातमान तक — लगभग आठ किलोमीटर — पैदल रोते हुए, नौहा (शोक का संगीत) बजाते हुए जाते थे।

इस दिन कोई राग-रागिनी नहीं बजती थी — राग-रागिनियों की अदायगी का इस दिन निषेध था।

उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार की शहादत में नम रहती थीं। यह हजारों आँखों की नमी के साथ हजार

बरस की परंपरा का पुनर्जीवन था।

इस प्रसंग से एक बड़े कलाकार का सहज मानवीय रूप उभर कर आता है।

उत्तर: मुहर्रम के दस दिनों में खाँ साहब का परिवार कोई संगीत कार्यक्रम नहीं करता था। आठवीं तारीख को वे रोते हुए, नौहा बजाते हुए दालमंडी में आठ किलोमीटर पैदल जाते थे। इस दिन राग-रागिनी का निषेध था — यह शोक-भागीदारी उनके सच्चे इनसान होने की गवाही देती है।

प्रश्न 10

बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

हल

बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे — इसके अनेक तर्क पाठ में मिलते हैं:

1. जीवन-भर साधना: वे अस्सी वर्षों से सुर माँग रहे थे। 90 वर्ष की आयु तक संगीत साधना उनके जीवन का केंद्र रही। यह अनन्य समर्पण ही उन्हें कला का सच्चा उपासक बनाता है।
2. सुर की प्रार्थना: उनकी पाँचों वक्त की नमाज और लाखों सजदे एक ही प्रार्थना के लिए होते थे — 'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे।' यह दिखाता है कि उनके लिए संगीत ईश्वर-भक्ति से अभिन्न था।
3. कला को भौतिक सुख से ऊपर रखना: भारतरत्न और अनेक पुरस्कार पाने के बाद भी उन्होंने सादगी नहीं छोड़ी। उनका कहना था — 'बनाव सिंगार देखते रहते तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई।'
4. आत्म-मंथन और निरंतर सीखने की जिजीविषा: वे 80 वर्ष की उम्र में भी सोचते थे कि 'सातों सुरों को बरतने की तमीज उन्हें सलीके से अभी तक क्यों नहीं आई।' यह विनम्रता और निरंतर सीखने की भावना अनन्य उपासक का लक्षण है।
5. हर चीज़ में संगीत देखना: कचौड़ी के तेल में 'छन्न' की आवाज में भी वे आरोह-अवरोह देखते थे — यह कला की दृष्टि हर पल जागृत थी।
6. काशी से जुड़ाव: काशी में मंदिर की ड्योढ़ी पर नित्य शहनाई बजाना उनका जीवन-व्रत था। खुदा के सुर की उन्हें प्रतीक्षा थी जैसे हिरन अपनी महक के वरदान को खोजता है।

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ अस्सी वर्षों की अखंड साधना, हर नमाज में सच्चे सुर की प्रार्थना, भौतिक सुख को कला के लिए त्यागना, वृद्धावस्था में भी आत्म-मंथन और हर चीज़ में संगीत देखने की दृष्टि — इन सब तथ्यों से सिद्ध होता है कि वे कला के अनन्य उपासक थे।

प्रश्नावली 10.3 — भाषा-अध्ययन

प्रश्न 11

निम्नलिखित मिश्र वाक्यों के उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए— (क) यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। (ख) रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। (ग) रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। (घ) उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा। (ङ) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है। (च) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

हल

मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।

(क) यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।
• प्रधान उपवाक्य: यह जरूर है
• आश्रित उपवाक्य: कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं — (संज्ञा उपवाक्य)

(ख) रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।
• प्रधान उपवाक्य: रीड अंदर से पोली होती है
• आश्रित उपवाक्य: जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है — (विशेषण उपवाक्य — 'रीड' का विशेषण)

(ग) रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।
• प्रधान उपवाक्य: रीड नरकट से बनाई जाती है
• आश्रित उपवाक्य: जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है — (विशेषण उपवाक्य — 'नरकट' का विशेषण)

(घ) उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।
• प्रधान उपवाक्य: उनको यकीन है
• आश्रित उपवाक्य: कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा — (संज्ञा उपवाक्य)

(ङ) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है।
• प्रधान उपवाक्य: हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है
• आश्रित उपवाक्य: जिसकी गमक उसी में समाई है — (विशेषण उपवाक्य — 'वरदान' का विशेषण)

(च) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।
• प्रधान उपवाक्य: खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है
• आश्रित उपवाक्य: कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा — (संज्ञा उपवाक्य)

उत्तर: (क) संज्ञा उपवाक्य: 'कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं'; (ख) विशेषण उपवाक्य: 'जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है'; (ग) विशेषण उपवाक्य: 'जो डुमराँव में ... पाई जाती है'; (घ) संज्ञा उपवाक्य: 'कभी खुदा ... मेहरबान होगा'; (ङ) विशेषण उपवाक्य: 'जिसकी गमक उसी में समाई है'; (च) संज्ञा उपवाक्य: 'कि पूरे अस्सी बरस ... जिंदा रखा'।

प्रश्न 12

निम्नलिखित वाक्यों को मिश्रित वाक्यों में बदलिए— (क) इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं। (ख) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है। (ग) धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं। (घ) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

हल

मिश्रित (मिश्र) वाक्य में एक मुख्य (प्रधान) उपवाक्य होता है और उससे जुड़ा एक आश्रित उपवाक्य होता है, जो 'कि', 'जो', 'जिसका', 'जैसे' आदि से जुड़ता है।

(क) इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं।
मिश्रित वाक्य: यह बालसुलभ हँसी वही है जिसमें कई यादें बंद हैं।

(ख) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है।
मिश्रित वाक्य: काशी में एक परंपरा है जो संगीत आयोजन की दृष्टि से प्राचीन एवं अद्भुत है।

(ग) धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं।
मिश्रित वाक्य: धत् पगली! यह भारतरत्न जो हमें मिला है, वह शहनाई पर मिला है, लुंगी पर नहीं।

(घ) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।
मिश्रित वाक्य: काशी में एक नायाब हीरा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

उत्तर: (क) यह बालसुलभ हँसी वही है जिसमें कई यादें बंद हैं। (ख) काशी में एक परंपरा है जो संगीत आयोजन की दृष्टि से प्राचीन एवं अद्भुत है। (ग) यह भारतरत्न जो हमें मिला है, वह शहनाई पर मिला है, लुंगी पर नहीं। (घ) काशी में एक नायाब हीरा है जो हमेशा से दो कौमों को भाईचारे से रहने की प्रेरणा देता रहा।